*** नए सवेरे का स्वागत ***

पेड़ों की शाखों पर शबनम
मोती जैसी चमक रही,
कलियों में दुबकी पंखुड़ियां
ले अंगड़ाई उमग रही।।

उषाकाल में रक्तिम होकर,
किरणें उगने को आकुल हैं
नवल कांति, नव ऊर्जा लेकर,
नव-प्रभात को व्याकुल हैं।।

नई बहारें, कर आलिंगन
उल्लास-उमंग से आई हैं
भंवरों की गुंजन से देखो
नई मधुरिमा छाई है।।

नई भौर में, नवल लतायें
प्रेम का राग सुनाएंगी,
खेतों में खुशियों की फसलें
लहर-लहर लहराएंगी।।

नव-अंकुर, सब नवल जोश से
अपना परचम फैलाएंगे।
खग-समूह, उन्मुक्त गगन को,
नई चहक चहकाएंगे।।

कोयल-मिट्ठू,मोर-पपीहे
अपने स्वर में गाएंगे,
उपवन में, नव-सुमन खिलेंगे
नव-सुवास महकायेंगे।।

नई सुबह के अरुणोदय में,
हम भी शीश झुकाते हैं
श्री हरि के चरणों में वंदन
कर अनुग्रह पाते हैं।।

नई आस की नव किरणों का
स्वागत है-अभिवादन है
हर जन की आशा हो पूरी
यही प्रार्थना-अर्चन है।।

गोपाल कृष्ण व्यास
पूर्व न्यायाधीश